International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 949-950

ब्रिटिश काल में भारतमें विओद्योगीकरण एवं परंपरागत शिल्प का पतन एक आलोचनात्मक अध्ययन

संदीप कुमार
एम.ए., इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत |

प्रस्तावना

भारत में होने वाले विओद्योगीकरण के सम्बन्ध में विविध इतिहासकारो के अलग अलग मत रहे है इनमे इरफ़ान हबीब , मॉरिस डी मॉरिस , विपिन चंद्र , तपन राय चौधरी, डेनिएल थॉर्नर, आमिया कुमार बागची, जे कृष्णमूर्ति आदि प्रमुख हैं | इतिहासकार इरफ़ान हबीब का भारत के विओद्योगीकरण के सम्बन्ध में मानना है की 18 वी शताब्दी के अंतिम दशकों तक भारतीय उत्पादन पद्धति में पूँजीवादी तत्वों की वस्तुस्थिति नहीं थी अथवा नगण्य थी भारत में परंपरागत ढांचे के भीतर ही उत्पादन क्रिया चल रही थी परन्तु अंग्रेजों की उत्पादन प्रक्रिया पूंजीवाद पर आधारित थी | इस सम्बन्ध में मॉरिस डी मोरिस का कहना है कि भारत के हथकरघा उद्योगों का पतन अंग्रेजों की नीति के कारण नहीं हुआ अपितु इसके अनेक अन्य कारण थे | उदारणरार्थ भारत में राजनीतिक एकता आदि का आभाव, कृषि अर्थव्यवस्था में तकनीकी पिछड़ापन , धातुकर्म की सीमित जानकारी , परिवहन एवं संचालन साधनो का परंपरागत होना आदि प्रमुख कारण जिम्मेदार थे |

मॉरिस डी मॉरिस की विचारधारा का अनेक भारतीय इतिहासकारों जैसे तपन राय चौधरी विपिन चंद्र आदि द्वारा खंडन किया गया | विपिन चंद्रा जैसे भारतीय इतिहासकार भारत में विओद्योगीकरण के लिए ब्रिटिश सरकार की आर्थिक नीतियों को ही जिम्मेदार मानते है उनका कहना है कि 19 वीं शताब्दी में ब्रिटिश बुनकरो की तुलना में भारतीय बुनकरों की दशा निरंतर बिगड़ती चली गई | ब्रिटिश बुनकरों को बेरोजगारी का सामना नहीं करना पड़ा क्योंकि उनको शीघ्र ही आधुनिक उद्योगों में काम मिल गया जबकि भारतीय बुनकरों को प्रतिकूल परिस्थितियों में काम करना पड़ा | तपन राय चौधरी का कहना है कि ऐसा नहीं था की भारत में पूंजी का विकास नहीं हो पाया था | भारत में पूंजी के विकास की उतनी ही सम्भावनाये थी जितनी जापान में मेइजी शासन से पूर्व थी उनका यह भी कहना है कि राजनीतिक एकीकरण का होना न होना औद्योगीकरण में बाधक नहीं होता क्योंकि इटली, जर्मनी नीदरलैंड जैसे देशों में कई शताब्दियों तक राजनीतिक एकता नहीं रही थी वस्तुतः भारतीय उद्योगों के विकास के लिए जिस पूंजी की आवश्यकता थी वह अंग्रेजो द्वारा हड़प ली गई थी | साथ ही अंग्रेजो ने औपनिवेशिक शासन व्यवस्था के अंतर्गत भारतीय बाज़ारो का पूर्ण नियंत्रण कर लिया था | इसी प्रकार इतिहासकार आमिया बागची , ज कृष्णमूर्ति का यह मत है कि भारत में विओद्योगीकरण के लिए हथकरघा उद्योग का पतन मुख्य रूप से जिम्मेदार है

विओधोगीकरण का तात्पर्य है उधोगो का नष्ट होना अथवा पतन होना कैम्ब्रिज स्कूल के इतिहासकारों का मानना रहा है कि आधुनिकीकरण के साथ भारतीय उधोग मुख्यतः हस्तशिल्प उद्योग का स्वाभाविक रूप से पतन हुआ | जबकि राष्ट्रवादी स्कूल के इतिहासकारों का मानना रहा है कि अंग्रेजों ने भारतीय उद्योगों को स्व उदेश्यो की पूर्ति के लिए तबाह कर दिया एक ओर ब्रिटेन का औद्योगिकरण शुरू हुआ दूसरी ओर भारत का विओद्योगीकरण | विओधोगीकरण का विस्तृत अध्ध्यन पिछली शताब्दी मे अनेक भारतीय और विदेशी इतिहासकारों ने किया है | जिनमें नील चर्ल्स मॉरिस डी मॉरिस आमिया बागची शारदा राजू आदि प्रमुख इतिहासकार है |

वस्तुतः अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आये थे | प्लासी के युद्ध से पहले भारतीय सामग्री का निर्यात ही इंग्लैंड को अधिक हुआ करता था जबकि ब्रिटिश वस्तुओं की मांग भारतीय बाजारों में बहुत ही कम हुआ करती थी | ब्रिटिश व्यापारी सोना चांदी देकर भारतीय सामग्री खरीदते थे किन्तु 1757 के बाद राजनीतिक क्षेत्राधिकार बढ़ता चला गया | इंग्लैंड के व्यापारियों द्वारा भारत के साथ व्यापार में धन कमाने के उपरांत ब्रिटेन में व्यापारिक पूंजी का विकास हुआ धीरे धीरे यह व्यापारिक वर्ग ओद्योगिक वर्ग में परिवर्तित हो गया अर्थात व्यापारिक पूँजी औद्योगिक पूंजी के रूप में परिवर्तित होती चली गई | धीरे धीरे ब्रिटिश संसद में उद्योगपतियों का प्रभाव बढ़ने लगा और सरकार की आर्थिक नीतियों पर इस वर्ग का प्रभाव बढ़ने लगा |

मध्यकाल से ही भारत में तीन प्रकार के उद्योग प्रचलित थे - ग्रामीण कुटीर उद्योग नगरीय घरेलु उद्योग , नगरीय लघु उद्योग | ग्रामीण कुटीर उद्योग ग्रामवासियो की दैनिक आवश्यकताओं को पुरा करते थे | नगरीय घरेलु उद्योग शहरो की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओ का उत्पादन करते थे | यह उद्योग एक ही परिवार के सदस्यों द्वारा चलाये जाते थे | लघु नगरीय उद्योगों में परिष्कृत प्रकार की वस्तुओ का उत्पादन होता था | इन वस्तुओ की उत्पादन प्रक्रिया में मजदूरों की भी सहायता ली जाती थी | इन उद्योगों एक शासक वर्ग द्वारा संरक्षण दिया जाता था यही शासक वर्ग देशी बाजार में ऐश्वर्या की इस सामग्री का प्रमुख खरीददार भी होता था | उल्लेखनीय है कि प्राचीन काल से ही भारत की ऐश्वर्या सामग्री की मांग पश्चिम में अत्याधिक थी | यहाँ ऐश्वर्या की सामग्री बंगाल गुजरात कोरोमंडल तट आदि क्षेत्रो में बनाई जाती थी | इस सामग्री में महीन रेशमी कपडा ,जरी के काम का कपड़ा , सूती कपडा मलमल आदि प्रमुख थे | सूती कपडे की इंग्लैंड एवं यूरोपीय बाजारों में भारी मांग थी

ब्रिटिश सरकार ने भारत के साथ साथ भारतीय अर्थव्यवस्था को औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में बदलना शुरू कर दिया | वस्तुतः अपने प्रारंभिक चरण (1600-1757) में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में प्राय शांतिपूर्ण व्यापार में संलग्न थी | अंग्रेज व्यापारी भारत की ऐश्वर्य पूर्ण वस्तुओँ मसलो सूती एवं मलमल के कपड़ो आदि को सोना चांदी देकर खरीदते थे और यूरोप के बाजारों में ऊंचे दामों पर बेचते थे | इससे वे भारी लाभ कमाते थे | इसी कारण 17 वीं शताब्दी में भारत का रेशमी सूती कपड़े आदि का निर्यात थामसन एवं गैरिस्ट के शब्दो में शिखर पर था भारतीय सामान के ब्रिटिश के अधिकाधिक प्रवेश से वहा की सरकार चिंतित हो गई | जिस प्रकार प्राचीन भारत में रोमन साम्राज्य के द्वारा भारतीय वस्तुओं पर प्रतिबंध लगाया गया उसी प्रकार ब्रिटेन ने भी ऐसे कानून बनाना प्रारम्भ कर दिया की भारतीय सामान को ब्रिटेन में आने के लिए बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़े | प्लासी की विजय के पश्चात ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत में राजनीतिक प्रभाव बढ़ने लगा | अंग्रेजो ने अपनी विजयो के द्वारा अनेक भारतीय राज्यों का अस्तित्व समाप्त

कर दिया | अंग्रेज भारत में अधिकाधिक धन संपत्ति का दोहन करना चाहते थे | धीरे धीरे भारत से संपत्ति का बड़े पैमाने पर इंग्लैंड की ओर पलायन होने लगा | इसे कुछ इतिहासकार कंपनी की लूट भी मानते है |

भारत से ब्रिटेन की और पूंजी पलायन के कारण ब्रिटेन में औद्योगिक पूंजी का विकास हुआ | इंग्लैंड में एक औद्योगिक और उत्पादक वर्ग का विकास हुआ | इस औद्योगिक वर्ग ने सरकार पर ऐसी नीतियां बनाने का दबाव डाला ताकि ब्रिटैन में उद्योगों का विकास हो सके | इसी कारण उन्होंने भारतीय उद्योगों को तबाह करने की नीति का भी अनुसरण किया | भारतीय लघु उद्योगों को नष्ट करने के लिए अनेक दमनात्मक कदम उठाये गए | उनका उद्देश्य ब्रिटेन के उद्योगों के लिए भारत से कच्चा माल प्राप्त करना एवं भारत को अपने उद्योगों में विकसित तैयार माल के लिए एक बाजार के रूप में इस्तेमाल करना था | किन्तु इस क्रम में उनकी प्रतियोगिता भारतीय उत्पादों से थी इसलिए भारतीय उद्योगों को तबाह करना उन्हें आवश्यक लगा | भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों के उत्पादों के भारत में सर्वाधिक ग्राहक भारत के शासक वर्ग थे | इन्हीं शासकों द्वारा इन देशी उद्योगों को संरक्षण मिलता था किन्तु अंग्रेजों की विजय के साथ भारतीय शासक वर्ग का पतन होने लगा | इस शासक वर्ग की आर्थिक व राजनीतिक शक्ति अब कम हो गई | इस से यह वर्ग भारतीय ऐश्वर्या की सामग्री को खरीदने में सक्षम नहीं रह गया यह वर्ग स्वयं भी ब्रिटिश राज द्वारा संरक्षित हो गया जबकि कुछ शासकों का अंग्रेजो नै अस्तित्व ही समाप्त कर दिया | दूसरी ओर ब्रिटेन सरकार ने ब्रिटेन आने वाली भारतीय सामग्री पर भरी करारोपण किया उल्लेखनीय है कि सरकार की करारोपण सम्बन्धी नीति अतयंत ही विभेदकारी रही | उदाहरण के लिए ब्रिटिश भारत मे आयात होने वाले सूती एवं रेशमी वस्त्रों पर कर की दर साढ़े तीन प्रतिशत तथा उन्ही वस्त्रों पर दो प्रतिशत थी जबकि ब्रिटेन में आयात होने वाले सूती माल पर कर की दर 20 प्रतिशत , इस विभेदकारी नीति के कारण 1814 से 1835 के बीच ब्रिटिश सूती वस्त्र का भारत को निर्यात 10 लाख गज से बढ़कर 5 करोड़ गज हो गया जबकि इसी कालावधि में भारतीय सूती वस्त्रों का ब्रिटैन में आयात 10 लाख से घटकर तीन लाख रह गया और 1850 तक तो यह पचास हजार से भी कम हो गया इसी कारण भारत जैसे सूती वस्त्र निर्यातक देश 1850 तक आते आते बड़ा आयातक देश बन गया | अंग्रेजो ने मध्यस्त बुनकरों को निर्धारित मूल्यों पर ही सामान तैयार करने के लिए बाध्य किया करते थे उन्हें अन्य व्यापारियों को अधिक दामों पर अपनी सामग्री बेचने से रोका गया अंग्रेजो के मध्यस्त ऐसा करने के लिए कारीगरों पर अत्याचार किया करते थे जिसके कारण अनेक परिवार अपने व्यवसाय एवं क्षेत्र का परित्याग करने लगे |

राष्ट्रवादी स्कूल के इतिहासकारों ने विओद्योगीकरण की विस्तृत विवेचना की है दूसरी और कैम्ब्रिज स्कूल के इतिहासकारों का मानना है कि पारंपरिक भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों का पतन होना स्वाभाविक था | यद्यपि यह दुखद था | भारत में भी पश्चिमी देशों के सामान हस्तशिल्प उद्योगों का पतन होना स्वाभाविक था | निस्संदेह वैज्ञानिक तकनीकों के आधार पर जब उद्योगों का विकास होता है तो हस्तशिल्प उद्योगों का पतन होने लगता है | किन्तु इस प्रक्रम में हस्तशिल्प उद्योग के कारीगरों को रोजगार की नई सम्भावनाये मिलती है | पारम्परिक उद्योगों के स्थान पर आधुनिक उद्योगों की स्थापना होती है किन्तु यह तथ्य इंग्लैंड व अन्य पश्चिमी देशों के सन्दर्भ में ही सत्य हुआ | जब इंग्लैंड में 17 वी और 18 वीं सदी में हस्तशिल्प उद्योगों का पतन हुआ तो वह शीघ्र ही आधुनिक उद्योगों की स्थापना हुई | रोजगार एवं आय के साधनों में वृद्धि होती चली गई किन्तु भारत में हुए हस्तशिल्प उद्योगों के स्थान पर नए आधुनिक उद्योगों का विकास ब्रिटिश नीतियों के कारण नहीं हो सका | भारत में तो 1860 के दशक तक किसी प्रकार के आधुनिक उद्योग स्थापित नहीं किये गए थे | भारतीय कारीगरों को तो उस उद्योगिक प्रगति की कीमत चुकानी पड़ रही थी जो इंग्लैंड में हो रही थी |

राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने विओद्योगीकरण से सम्बंधित विनाशकारी प्रक्रिया को विस्तृत आकड़ो द्वारा दर्शाया | ये बताते है की किस प्रकार भारत के पारम्परिक वस्त्रों के निर्यात में किस प्रकार गिरावट आती है और दूसरी और ब्रिटेन के कपड़ो के आयात में वृद्धि होती है | एक अमेरिकी इतिहासकार मॉरिस डी मरिस ने भारत में विओद्योगीकरण की प्रक्रिया को एक मिथक माना है किन्तु उन्होंने यह दिखाने के लिए जिन तर्कों का सहारा लिया वे राष्ट्रवादी इतिहासकारों के तर्कों की तुलना में प्रबल नहीं है | उनका मानना है कि यद्यपि ब्रिटेन से बड़ी मात्रा में कपड़ो का आयात हुआ किन्तु तब भी देशी कपड़ा उद्योग अपने आप को विनिष्ट होने से बचा सकता था क्योंकि उस समय भारत में देशी और विदेशी दोनों कपड़ो की खपत हो सकती थी क्योंकि इस समय भारत में कपडे की मांग बहुत अधिक थी | मॉरिस के तर्क को इसलिए सही नहीं माना जा सकता क्योंकि एक तो उन्होंने इन से संबंधित कोई उचित आंकड़े प्रस्तुत नहीं किये है दूसरी और ब्रिटिश कपडा जो मशीनों द्वारा तैयार होता था वह भारत में हाथ से बने कपड़ों की तुलना में अधिक सस्ता और टिकाऊ था इसलिए इस प्रतियोगिता में भारतीय कपड़ो का टिका रहना संभव नहीं था | यद्यपि इस काल में आयातित धागे की कीमतें कम थी किन्तु इस से बुनकरों को अधिक लाभ नहीं हो पाया क्योकि बुनाई की लागत अधिक थी इस प्रकार भारतीय बुनकरों की स्थिति में सुधार हो ही नहीं सकता था जिस कारण उनका पतन होना स्वाभाविक था |

सन्दर्भ सूची

1. ऐन के सिन्हा- दी इकनोमिक हिस्ट्री आफ बंगाल खंड 3 (कलकत्ता 1979) |
2. अमिया बागची - प्रिवेट इन्वेस्टमेंट |
3. मॉरिस डी मारिस - इमरेज ऑफ़ ऍन इंडस्ट्रियल लेबर फोर्स इन इंडिया (कैलिफोर्निया 1965) |
4. आर सी दत्त - द इकनोमिक हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया ,इकनोमिक हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया इन द विक्टोरियन ऐज लन्दन 1904 |
5. विपिन चंद्र - राइज एंड ग्रोथ ऑफ़ इकनोमिक नेशनलिज़्म इन इंडिया ,न्यू देहली 1984 |
6. वी पी सिंह - इकनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया 1857-1956 |
7. आर पी दत्त - इंडिया टूडे |
8. तपन राय चौधरी - कंट्रीब्यूशन तो इंडियन इकनोमिक हिस्ट्री खंड 2(दिल्ली 1963) |
9. ललिता चक्रवर्ती - एमरजैंस ऑफ़ इंडस्ट्रियल लेबर फोर्स इन ऐ ड्यूल इकोनॉमी - ब्रिटिश इंडिया 1880-1920 (आई.इ.एस.एच.आर 1978) |
10. बी एन गांगुली - दादाभाई नैरोजी एंड द ड्रेन थ्योरी (बंबई1965) |
11. बिपिन चंद्र - नॅशनलिस्म एंड कोलोनियलिस्म इन मॉडर्न इंडिया (दिल्ली - 1979) |
12. आर सी दत्त - इकनोमिक हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया खंड 2 (लंदन 1901,1903) |